Nakoda Bhairav Chalisa Pdf In Hindi

| **दोहा** |

पार्श्वनाथ भगवान की, मूरत चित्त बसाय |

भैरव चालीसा लिखूँ, गाता मन हरसाय...२ ||

|| **चौपाई** ||

नाकोडा भैरव सुखकारी, गुण गावे ये दुनिया सारी ||

भैरव की महिमा अति भारी, भैरव नाम जपे नर-नारी ||

जिनवर के हैं आज्ञाकारी, श्रद्धा रखते समकित धारी ||

प्रातः उठ जो भैरव ध्याता, रिद्धि-सिद्धि सब संपद पाता ||

भैरव नाम जपे जो कोई, उस घर मे नित मंगल होई ||

नाकोडा लाखों नर आवे, श्रद्धा से प्रसाद चढावे ||

भैरव- भैरव आन पुकारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे ||

भैरव दर्शन शक्तिशाली, दर से कोई न जावे खाली ||

जो नर नित उठ तुमको ध्यावे, भूत पास आने नहीं पावे ||
डाकड़ छू मंतर हो जावे, दुष्ट देव आड़े नहीं आवे ||

मारवाड़ की दिब्य मणि हैं, हम सबके तो आप धनि हैं ||

कल्पतरू है पर्तिख भैरू, इच्छित देता सब को भैरव ||

आधि-व्याधि सब दोष मिटावे, सुमिरत भैरव शांति पावे ||

बाहर परदेशे जावे नर, नाम मंत्र भैरव का लेकर ||

चोघडिया दूषण मिट जावे, काल राहू सब नाठा जावे ||

परदेशा में नाम कमावे, धन बोरा में भर कर लावे ||

तन में साथा मन में साथा, जो भैरू को नित्य मनाता ||

मोटा डूंगर रा रहवासी, अर्ज सुणन्ता दौडया आसी ||

जो नर भक्ति से गुण गासी, पावे नव रत्नों की राशि ||

श्रद्धा से जो शीश झुकावे, भैरव अमृत रस बरसावे ||

मिल-जुल सब नर फेरे माला, दौडिया आवे बादल काला ||

बरसा ऋतू झाडियाँ बरसावे, धरती मा री प्यास बुझावे ||

अन्न सम्पदा भर-भर पावे, चारो ओर सुकाल बनावे ||

भैरव है सच्चा रखवाला, दुश्मन मित्र बनाने वाला ||

देश-देश में भैरव गाजे, खूंट-खूंट में डंका बाजे ||

हैं नही अपना जिनके कोई, भैरव सहायक उनके होई ||

नाभि-केंद्र से तुम्हे बुलावे, भैरव झटपट दौड़े आवे ||

भूखा नर के भूख मिटावे, प्यासे नर को नीर पिलावे ||

इधर उधर अब नहीं भटकना, भैरव के नित पाँव पकडना ||

इच्छित सम्पद आप मिलेगी, सुख की कलियाँ नित्य खिलेंगी ||

भैरव गण खर-तर के देवा, सेवा से बातें नर मेवा ||

कीर्ति रत्न की आज्ञा बाटें, हुक्म हाजिरी सदा बजाते ||

ओम् हीं भैरव बम-बम भैरव, कष्ट निवारक भोला भैरव ||

नैन मुंद धुन रात लगावे, सपने में वो दर्शन पावे ||

प्रश्नों के उत्तर झट मिलते, रास्ते के कंटक सब मिटते ||

नाकोडा भैरव नित ध्यावो, संकट में वो मंगल पावो ||

भैरव जपंता मालाम माला, बुझ जाती दुखों की ज्वाला ||

नित उठ जो चालीसा गावे, धन सुत से घर स्वर्ग बनावे ||

भैरू चालीसा पढ़े, मन में श्रद्धा धार ||

कष्ट कटे महिमा बढ़े, सम्पदा होत अपार ||

जिन कान्ति गुरुराज के, शिष्य मणिप्रभ राय ||

भैरव के सानिध्य में, ये चालीसा गाय ||

| **इति नाकोडा भैरव चालीसा समाप्तम्** |